ज्ञान शांति मैत्री
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केन्द्र
२ए/२बी मृगेंद्रलाल मित्र रोड, द्वितीय तल, कोलकाता - ७७

फोटो-राजेश अरोड़ा

कोलकाता केंद्र की गतिविधियां 2011

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विधिवत कामकाज पहली जुलाई 2011 को शुरू हुआ जब कोलकाता के बीचों बीच पार्क सर्कस (2ए/ 2बी मृगेंद्रलाल मित्र रोड, कोलकाता) में भाड़े की जगह मिल गई। कोलकाता केंद्र ने 2011 में कई शैक्षणिक कार्यशालाओं, अनुवाद कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और साहित्यकारों से संवाद कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसका विवरण इस प्रकार है-

19 जुलाई 2011 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

रचना की मूल संवेदना तक पहुंचने की जरूरतः केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 19 जुलाई। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आज प्रेमचंद कीकहानियों में वर्तमान समय के लिए उपयोगी मूल्य तलाशने पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।लोरेटो कालेज की हिंदी विभागाध्यक्ष डा. राखी राय हल्दर ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के जरिए बताया कि प्रेमचंद की मंत्र और सवा सेर गेहूं कहानियों को उस युग के लोगों की चित्तवृत्ति और ऐतिहासिक संदर्भों को खंगालते हुए समाजशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे विषयों के सहारे आज के समय के लिए बहुत सारे उपयोगी मूल्य खोजे जा सकते हैं। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि इस तरह की गंभीर कार्यशालाओं के आयोजन से रचना की मूल संवेदना तक पहुंचते हुए साहित्य को आम लोगों तक पहुंचने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इसकी बहुत जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

13 सितंबर 2011 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

हिंदी विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी

कोलकाता, 13 सितंबर। हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आज विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों, छवि संग्रहों और कैसेट की प्रदर्शनी लगाई गई। पश्चिम बंग हिंदी अकादमी के अध्यक्ष विवेक गुप्ता, सन्मार्ग के संपादक हरिराम पांडेय, प्रभात खबर के स्थानीय संपादक कौशल किशोर त्रिवेदी, हिंदी अकादमी के सदस्य तथा जाने-माने अनुवादक राधा कृष्ण प्रसाद और विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन की प्रोफेसर डा. मंजूरानी सिंह समेत भारी संख्या में विद्वानों और पाठकों ने प्रदर्शनी देखी।

16 नवंबर 2011 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

हिंदी ने बनाया मुझे अखिल भारतीयः सुनील गंगोपाध्याय

कोलकाता। एक समय परंपराभजक की पहचान लेकर उभरे बांग्ला के वरिष्ठ कवि और कथाशिल्पी सुनील गंगोपाध्याय ने कहा है कि फिल्मकारों को साहित्यिक कृतियों में मामूली परिवर्तन का अधिकार है। श्री गंगोपाध्याय सोलह नवंबर 2011 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के संवाद कार्यक्रम में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। यह कार्यक्रम विवि के कोलकाता केंद्र में ही आयोजित किया गया था।हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने पूछा कि 'मनेर मानुष' उपन्यास पर इसी नाम से बनी फिल्म में मूल कृति में कतिपय परिवर्तन होने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है, इसके जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि उनकी कथाकृतियों पर 'अरण्येर दिनरात्रि', 'प्रतिद्वंद्वी', 'सबुज द्वीपेर राजा', 'जीवन जे रकम', 'अर्जुन', 'श्याम साहब', 'मधुमय' से लेकर 'मनेर मानुष' शीर्षक जो फिल्में बनीं और ये फिल्में सत्यजीत राय से लेकर गौतम घोष जैसे फिल्मकारों ने फिल्में बनाईं तो उन्होंने कहानी के ट्रीटमेंट के साथ मामूली परिवर्तन भी किया, इसका हक फिल्मकारों को है।

दो सौ किताबों के लेखक सुनील गंगोपाध्याय ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि हिंदी ने उन्हें अखिल भारतीय बनाया। पहले उनकी किताबें हिंदी में अनूदित हुईं और फिर हिंदी से मराठी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में। इसलिए वे हिंदी के प्रति कृतज्ञ हैं। 'प्रभात खबर' के स्थानीय

संपादक तारकेश्वर मिश्र के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि आज बंगाली घरों में अंग्रेजी का प्रभाव बुरी तरह घर कर गया है। बंगाली युवक भारतीय भाषा संस्कृति के मुकाबले यूरोप की भाषा- संस्कृति को महत्व देने लगा है। बंगाली युवा वर्ग की रुचि बांग्ला साहित्य पढ़ने के बाद सीधे यूरोप के साहित्य में हो जाती है, यही कारण है कि बांग्ला में हिंदी साहित्य का अनुवाद लाने में बड़े प्रकाशक उदासीनता दिखाते हैं।

श्री गंगोपाध्याय ने 'भारत मित्र' के संपादक मोहम्मद इसराइल केसवाल के जवाब में स्वीकार किया कि बांग्लाकी जितनी रचनाएं हिंदी में अनूदित होती हैं, उतनी हिंदी की रचनाएं

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में आयोजित 'सुनील गंपोपाध्याय से संवाद' कार्यक्रम में बाएं से डा. कृपाशंकर चौबे, श्री गंगोपाध्याय, केदारनाथ सिंह और सुबोध सरकार।

बांग्ला में अनूदित नहीं हो पाती। हिंदी की बांग्ला से एकतरफा संबंध की शिकायत जायज है। श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि हिंदी की अनेक अच्छी रचनाओं के बांग्ला अनुवाद की बहुत जरूरत है। अच्छे पाठक की पहचान उनके पढ़ने की रूचि से होती है।

बांग्ला के प्रसिद्ध कवि और सिटी कालेज कोलकाता में अंग्रेजी के प्रोफेसर सुबोध सरकार के सवाल के जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि टेलीविजन के आकर्षण और इसकी चमक ने युवाओं में साहित्यिक रूचि काफी कुछ छीन ली है, सिर्फ युवा ही नहीं प्रौढ़ वर्ग भी इसके आकर्षण में आ गया है। लोगों की रुचि कम होने से साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला भी सिकुड़ने लगा और अब हालात सामने हैं। हालांकि हिंदी में साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रसार के कम होने के बावजूद बांग्ला में साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला ठीक ठाक है, कविताएं भी अच्छी लिखी जा रही हैं,लेकिन प्रौढ़ गद्य कम दिखाई देता है।

लोरेटो कालेज, कोलकाता की हिंदी विभागाध्यक्ष डा.राखी राय हल्दर के प्रश्न के जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि वे अपनी कहानियों में जब गांव की परिकल्पना करते हैं तो बचपन का माइचपाड़ा गांव बरबस याद आता है,जहां मुश्किल ढाई तीन साल रहे थे। आज भी उसकी यादें ताजा हैं। वहां के रास्ते, पेड़ खेत तालाब, के बिंब दिमाग में उभरते हैं। फरीदपुर जिले का माइचपाड़ा गांव अब बांग्लादेश में हैं। सुशील कांति के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि बंटवारे की त्रासदी की आवाज उनकी कहानियों में सुनी जा सकती है। डा. संजय जायसवाल के सवाल के जवाब में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि अभी तो उनका सर्वश्रेष्ठ लेखन आना बाकी है।

कार्यक्रम के आरंभ में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि यह संवाद श्रृंखला विवि के कुलपति विभूतिनारायण राय के सुझाव पर शुरू की गई है। इसका उद्देश्य बांग्ला,उड़िया, असमिया सहित पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदी का संवाद बढ़ाना और तदनुसार सांस्कृतिक सम्बन्धों का निर्माण करना है। उन्होंने बताया कि मशहूर शक्सियतों व विद्याब्रतियों से संवाद की यह श्रृंखला हर महीने आयोजित की जाएगी। इससे शोधार्थियों व अध्येताओं को अपनी जिज्ञासाएं शांत करने का अवसर भी मिलेगा।

22 नवंबर 2011 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

शुद्धता हमेशा भाषा की शत्रु होती है-केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 22 नवंबर। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र ने 22 नवंबर 2011 को अपने सभाकक्ष में संवेदनहीन होते समय में कविता (अभिज्ञात के नए कविता संग्रह 'खुशी ठहरती है कितनी देर' के विशेष संदर्भ में) पर एक संगोष्ठी का आयोजन वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर डा. केदारनाथ सिंह ने कहा कि अभिज्ञात ने कविता में गद्य का बेहतरीन प्रयोग करते हुए कई विलक्षण कविताएं लिखी हैं। यह अतिरिक्त बात उनके काव्य-व्यक्तित्व को अधिक अर्थवान बनाती है। वे कविता में क्रीड़ा-कौतुक करते हैं और भाषा व भावों के साथ खेलते हुए एक ऐसी रचनात्मकता अर्जित करते हैं जो उनका अपना क्रिएशन है। यह कार्य हिन्दी कविता में नागार्जुन ही कर सकते थे।

'संवेदनहीन होते समय में कविता' पर आयोजित संगोष्ठी में बाएं से अभिज्ञात, नवारुण भट्टाचार्य, केदारनाथ सिंह और डा. शंभुनाथ

केदार जी ने कहा कि यह विस्मयकारी लगा कि अभिज्ञात टूटाने की आवाज़ों का स्वागत करते कवि हैं। ग़ालिब की तरह उन्हें भी टूटने की आवाज़ें अच्छी लगती हैं। अपनी कविता 'तोड़ने की शक्ति' में कहते हैं-'जाने क्यों अच्छी लगती है मुझे टूटने की आवाज़ें'। इस भाव का जन्म काफी पहले कलकत्ता में मिर्जा ग़ालिब के यहां उस समय हुआ, वे जब कलकत्ता आये थे, शायद उन्होंने तभी ये शेर कहा होगा-' न गुल-ए-नग़मा हूँ, न परदा-ए-साज़/मैं हूँ अपनी शिकस्त की आवाज़।' ग़ालिब कलकत्ता में ढाई साल रहे। यहां उन्हें नयी चेतना मिली। वे अपने परिवेश के

प्रति बेहद चौकन्ने हैं। यह बात उनकी दंगे पर लिखी कविता में विशेष तौर पर उभर कर आयी है। दंगे पर उन्होंने एक अच्छी कविता लिखी है 'दंगे के बाद'। मेरठ में हुए दंगे पर नागार्जुन ने भी 'तेरी खोपड़ी के अन्दर' कविता लिखी थी। दोनों की कविताओं में साम्य यह है कि ये इस क्रिएटिव तरीके से लिखी गयी हैं कि वे दंगे पर सामान्यीकृत प्रतिक्रया नहीं हैं। सामान्य को कविता में किस प्रकार विशिष्ट बनाया जाता है वह काबिलियत अभिज्ञात ने अर्जित कर ली है। अभिज्ञात की एक और बात जो मुझे आकृष्ट करती है वह यह कि वे साहित्य की अतिरिक्त गंभीरता को तोड़ते हैं। कविताओं में कई जगह हास्य या व्यंग्य करते हैं, जिनमें क्रीड़ा भाव अनेक स्थानों पर मिलता है और वे बहुत सहज ढंग से बड़ीं बात कह जाते हैं। उसकी एक छोटी सी कविता 'भगवान जी से' का उल्लेख करना चाहता हूं। इसमें कवि ने भगवान से समान स्तर पर बात की है। भगवान का कोई आतंक नहीं है। ऐसा सिर्फ़ नागार्जुन कर सकते थे। एक वैराग्यपन की भाषा है अभिज्ञात की इस कविता में, यथा- 'प्रभु! तुम्हारी छोटी सी मूर्ति के पास/ठीक नीचे रखे हैं झाड़ू और जूते चप्पल/उन्हें तुम इग्नोर करना वह तुम्हारे लिए नहीं हैं/ तुमसे अपील है कि तुम अपने काम से काम रखो /और वह जो फूल तुम्हारी मूर्ति के पास रखा है/और जली हैं अगरबत्तियां, जला है एक घी का दिया/बस वही तुम्हारे हैं, उतना ही है तुम्हारा तामझाम, माल असबाब/तुम वहीं तक सीमित रहो, और उतने में ही मगन/ यह छोटा सा घर है मेरा, उसी में तुम्हें भी ज़गह दी है यही क्या कम है?' 'हावड़ा ब्रिज' कविता कोलकातावासियों को खास तौर पर पढ़नी चाहिए। मैंने भी पुल पर कविता लिखी हैं। मेरी जानकारी में हावड़ा ब्रिज पर हिन्दी में ऐसी कविता नहीं लिखी गयी। उनकी कविताओं में हिन्दी से इतर भाषा के उन्होंने कहा कि शुद्धता हमेशा भाषा की शत्रु होती है। बांग्ला के वरिष्ठ साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि भाषा की शुद्धता पर हमें बहुत जोर नहीं देना चाहिए। विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र के प्रभारी डॉ.कृपाशंकर चौबे ने कहा कि कविता में स्थानीयता का बहुत महत्व है। वह कविता का एक गुण बन जाती है। यह विशेषता राजेश जोशी से लेकर अभिज्ञात की कविताओं में मिलती है। सुपरिचित आलोचक डॉ.शंभुनाथ ने कहा कि इस संवेदनहीन होते समय में संवेदना की बैटरी को चार्ज करने वाले कवि केदार जी और अभिज्ञात हैं। अभिज्ञात की कविताओं में स्थानीयता अभी बची हुई है। वे स्थान को इतिहास व स्मृति के हवाले नहीं करते। 'माझी का पुल' और 'हावड़ा ब्रिज' जैसी कविताएं स्थान को बचाये हुए हैं। ये स्थान लोगों की स्मृतियों में झूलते रहते हैं। नागार्जुन की कविता 'पछाड़ दिया मेरे आस्तिक' की तरह अभिज्ञात भी कविता लिखते हैं 'सूर्य की सिंचाई'। दोनों कविताएं अपने-अपने समय की और अपनी तरह की अद्भुत कविताएं हैं।

कार्यक्रम का संचालन कर रही कलकत्ता विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.राजश्री शुक्ला ने कहा कि अभिज्ञात की कविताओं में सामान्य अनुभवों का विशेष आस्वाद है। एक सामान्य अनुभव का अंश हमारे सामने आता है और अपने आपको काटकर विशेष हो जाता है। ये कविताएं स्पंदित करती हैं। इन कविताओं में स्व का विस्तार है। इस कार्यक्रम में अभिज्ञात ने 'पैसे फेंको' और 'वापसी' कविताओं का पाठ किया।